राजस्थान की हस्तकला

→ हस्तकला का मुख्य केन्द्र बोरानाड़ा (जोधपुर) को माना जाता है।

→ राज० में हस्तकला से सम्बन्धित सर्वाधिक कार्य (जयपुर) जिले में किया जाता है।

→ हस्तकलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला (मीनाकारी) कला को माना जाता है। जो सर्वाधिक महंगी कला है।

→ हस्तकला से सम्बन्धित कलाकारों को (चिजेरा / छीपा) कहा जाता है।

→ हस्तकला से सम्बन्धित प्रशिक्षण जिस स्थान पर दिया जाता है। उस स्थान को (शिल्पग्राम) कहा जाता है।

→ हस्तकला को (राजसीको संस्था) के द्वारा प्रोत्साहन किया जाता है।

→ **राज० के प्रमुख शिल्पग्राम —**

1. हवाला ग्राम → उदयपुर
2. पाल ग्राम → जोधपुर
3. जवाहर कला केन्द्र → जयपुर
4. मोलेला गाँव → नाथद्वारा (राजसमंद)
5. हाथी गाँव → जयपुर

★ उस्ता कला :—

→ प्रसिद्ध → बीकानेर

→ प्रसिद्ध कलाकार → "हिसामुद्दीन उस्ता"

→ विशेष → ① ऊँट की चमड़ी पर चित्रकारी करना
② मृत ऊँट की खाल पर सोने के रंगो से चित्रकारी करना उस्ता कला कहलाती है।

★ पिछवाई कला :—

→ प्रसिद्ध → नाथद्वारा (राजसमंद)

→ प्रसिद्ध कलाकार → नरोत्तम नारायण वर्मा

→ वस्त्र → काले रंग के वस्त्र पर

→ विशेष → ① श्रीनाथजी / श्रीकृष्ण की प्रतिमा के पीछे लगे काले रंग के कपड़े पर श्रीकृष्ण से सम्बन्धित बाल लीलाओं का चित्रांकन करना पिछवाई कहलाती है।

★ फड़ चित्रण कला :—

→ प्रसिद्ध → शाहपुरा (शीलपाड़ा)
→ कलाकार → क्षीलाल जोशी + हीरालाल जोशी
→ महिला कलाकार → पार्वती जोशी
→ वस्त्र → सूती / रेस्टा वस्त्र पर
→ विशेष → देवी-देवताओं व विशेष व्यक्तियों की जीवनी को सूती वस्त्र पर अंकित करना व उनसे सम्बन्धित चित्र।

★ मीनाकारी कला :—

→ प्रसिद्ध → जयपुर
→ कलाकार → कुंदनसिंह
→ उपनाम → → हस्तकलाओं का सिरमौर
→ हस्तकला की आत्मा
→ सर्वाधिक मंहगी कला
→ विशेष → सोने व चाँदी की धातु से निर्मित आभूषणों पर चित्रकारी व रंग भरने की कला मीनाकारी कला कहलाती है।

★ थेवा कला :—

→ प्रसिद्ध - प्रतापगढ़
→ कलाकार - नाथूरामसोनी
→ अन्य कलाकार - गिरिश कुमार, जगदीश कुमार, गोपाल कुमार
→ परिवार - राजसोनी परिवार

- कॉंच → बेल्जियम के कठोर कॉंचो पर
- रंग → सोने के रंगो से
- विशेष → बेल्जियम के कठोर कॉंचो पर सोने के रंगो से चित्रकारी करना।

★ ब्लू पॉटरी :-

- मूलत – (ईरान) पर्शिया
- राज० मे लाने का श्रेय → मानसिंह - I
- प्रसिद्ध → जयपुर
- स्वर्णकाल → रामसिंह - II
- जादूगर → कृपालसिंह शेखावत
  - निवासी - महुगॉंव (सीकर)
  - पद्मश्री - 1974
  - गुरु - भूरसिंह शेखावत
- मिट्टी → चीनी / चिकनी मिट्टी से
- रंग → नीले रंग का प्रयोग
- विशेष → चीनी / चिकनी मिट्टी से निर्मित वस्तुओ पर नीले रंग से चित्रकारी करना ब्लू पॉटरी कहलाता है।

① ब्लैक पॉटरी → कोटा
② पीली पॉटरी → जैसलमेर
③ गुलाबी पॉटरी → नाथद्वारा (राजसमंद)

(5) सुनहरी पॉटरी → बीकानेर
(6) कागजी पॉटरी → अलवर

★ **टेराकोटा कला :-**

- → प्रसिद्ध – मोलेला (राजसंमद)
- → कलाकार – खेमराज कुम्हार + प्रदीप कुमार
- → मिट्टी – मध्यमकाली मिट्टी में गधे की लिद मिलाकर
- → विशेष – मध्यमकाली मिट्टी से सुन्दर कलात्मक खिलौनों का निर्माण करना
- → **Note** – मौलेला (राजसंमद) व "बू" गाँव नागौर मिट्टी के खिलौने हेतु प्रसिद्ध है।

→ मिट्टी के घोड़े → ~~जय रूपाई~~ हरजी गाँव (जालौर)

→ मिट्टी के खिलौने → मौलेला गाँव

→ मिट्टी के समान → उदयपुर

→ मिट्टी के खेल-कूद के समान → हनुमानगढ़

→ मिट्टी के औजार → नागौर

→ कृषि के औजार → श्रीगंगानगर

→ लकड़ी के झूले → जोधपुर

→ लकड़ी के खिलौने → सवाईमाधोपुर

→ कठपुतलियाँ → उदयपुर व जयपुर

→ नमदे → टोंक

→ गलीचे → जयपुर

→ कपड़े के घोड़े → जैसलमेर

→ पापड़ भुजिया → बीकानेर

→ आम पापड़ → बांसवाड़ा

→ रसगुल्ले → बीकानेर

→ पाव रजाई → जयपुर

→ मलमल की रजाई → जोधपुर

→ मोचड़िया → जोधपुर

→ खेसला कला → लेटा गाँव (जालौर)

→ अजरख व मलीर प्रिन्ट → बाड़मेर

→ दाबू प्रिन्ट → आकोला (चित्तौड़गढ़)

→ काष्ठ कला → बस्सी (चितौड़गढ़)

→ पान्ने कला → जयपुर

→ तारकसी जेवर → नाथद्वारा (राजसमंद)

→ बादला कला → जोधपुर

→ तलवारे → सिरोही

→ आजम व जाजम कला → चितौड़गढ़

→ बगरु प्रिन्ट →
→ सांगानेरी प्रिन्ट →] जयपुर

→ कोटा-डोरिया → ~~कैथून~~ (कोटा) मागरोल

* पान्ने कला *

- प्रसिद्ध -
- विशेष - कागज पर देवी-देवताओं के चित्रों को अंकित करना पान्ने कहलाते है

बादल कला

- प्र० — जोधपुर
- विशेष — जिंग व जस्ते से निर्मित बोतले बादला कहलाती है।

→ **कावड** — कावड का जादुगर → मांगीलाल मिस्त्री

→ यह एक लकडी से निर्मित मन्दिरा नुमा आकृति है। जिसमे ठाकुर जी की शोभायात्रा निकाली जाती है।

★ **बेमाण / विमाण** —

→ यह एक लकडी से निर्मित मन्दिरानुमा आकृति है। जिसे भाद्रपद शुक्ल एकादशी में निकाला जाता है।

संस्कार

→ **समावर्तन संस्कार :-**

→ किशोर के द्वारा अपनी सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त कर अपने गुरु को गुरुदक्षिणा देकर देना।

→ **विवाह संस्कार :-**

→ किशोर के द्वारा गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना।

→ **अन्त्येष्टि संस्कार :-**

→ जीवन का अंतिम संस्कार
→ इस संस्कार मे शव को मुखाग्नि दी जाती है।